विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग अष्टम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-११/१०/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ: सप्तम: पाठनाम पर्यावरण – विज्ञानम्

पाठ्याश: यज्ञ आहुति – प्रदानेन सह क्रियमाणेन मन्त्रोच्चारणेन वायुमण्डले प्रसृताभि: स्वरलहरीभ्य: रोगाणां चिकित्सा अपि कर्तुं पार्यते ।यज्ञभस्मना उर्वरशक्त्या: कृषिमात्राया: गुणवत्तायाश्च संवर्धनं तु सुविदितमेव संक्षेपे अस्य कथनस्य अयम् आशय: - यदि वयं पर्यावरणं रक्षयिस्मास्तदा अस्माकं जीवनमपि संरक्षित भविष्यति। यदि पर्यावरणं प्रदूषयिष्यामस्तदा अस्माकम् जीवनमपि विविधै: रोगै: संकटैश्च आपन्नं भविष्यति ।

शब्दार्था:-

प्रसृताभि: - फैले हुए से , कर्तुं पार्यते - कर सकते हैं

सुविदितमेव - सही से पता है , आपन्नं - ग्रस्त

अर्थ –

यज्ञ आहुति प्रदान के साथ किए गए मन्त्रोच्चारण से वायु-मण्डल में फैले हुए स्वरलहरी के द्वारा रोगों की चिकित्सा भी हो सकती है। यज्ञ के भस्म से उर्वराशक्ति की कृषिमात्रा की और गुणवत्ता का सम्वर्धन तो विदित ही है । संक्षेप में इस कथन का आशय यह है – यदि हमलोग पर्यावरण की रक्षा करेंगे तब हमलोगों जीवन भी सुरक्षित रहेगा । यदि पर्यावरण को प्रदूषित करेंगे तब हमारा जीवन भी विभिन्न रोगों और संकटों से घिरा रहेगा ।